रसिया है मेरो ...

रसिया है मेरो बाँके बिहारी लाल ।।

मुकुट है तिरछा, तिरछी है चितवन
तिरछे मुकुट पे (है), चम्पा की लटकन
गालन पे सोहे, कारे-कारे घुंघराले बाल ... ।।1।।

कांधे पे सोहे, कारी कामरिया
अधरन (पे) सोहे, मधुर बांसुरिया
और सोह रही है, गल वैजंती माल ... ।।2।।

नील वरण पे, पीरो है पटका
या छवि पे, मेरा मन अटका
मैं तो हो गई उसकी, वो मेरा मदन गोपाल ... ।।3।।

http://www.govindbhargav.in